Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

कनिष्ठ (III- IV- V)

ANY FOUR OUT OF FIVE

भारतं तं नुमो भारतं तं नुमः

यत्र वेदध्वनिः पापसंहारिणी
यत्र शास्त्रादि-चर्चा मनोमोहिनी।
यत्र वेदान्त-विद्या सुधाधायिनी
भारतं तं नुमो भारतं तं नुमः।। 1।।

जहाँ वेद की ध्वनि पापनाशक है,
जहाँ शास्त्र आदि की चर्चा मनमोहक है,
जहाँ वेदान्त- विद्या अमृतदायिनी है,
(ऐसे महान्) हे भारत देश। तुम्हें नमन है। भारत तुम्हें मेरा नमन है।

यत्र सत्यं शिवं सुन्दरं राजते
यत्र धर्मार्चना वीरपूजा सदा।
यत्र विश्वं कुटुम्बं मतं श्रेयसे
भारतं तं नुमो भारतं तं नुमः।। 2।।

जहाँ सत्य शिव, सुन्दर सुशोभित है,
जहाँ धर्म, अर्चना तथा वीर की पूजा सदा की जाती है,
जहाँ 'संसार एक परिवार के समान' इस मत को श्रेयस्कर माना जाता है,
(ऐसे महान्) हे भारत देश! तुम्हें नमन है। भारत तुम्हें मेरा नमन है।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

यत्र गङ्गा नदी, यत्र कालिन्दिका
यत्र गोदा च कृष्णा च कावेरिका।
यत्र सिन्धुर्विपाशा शुभा नर्मदा
भारतं तं नुमो भारतं तं नुमः।। 3।।

जहाँ (पवित्र) गंगा नदी, जहाँ कालिन्दी,
जहाँ गोदावरी, कृष्णा और कावेरी हैं
जहाँ सिन्धु विपाशा और शुभ नर्मदा है
(ऐसे महान्) हे भारत देश! तुम्हें नमन है। भारत तुम्हें मेरा नमन है।

यत्र रामश्च कृष्णश्च विश्वात्मनौ
यत्र बुद्धो वसिष्ठश्च वल्मीकजः।
गोतमो जैमिनिः श्रीकणादो मुनिः
भारतं तं नुमो भारतं तं नुमः।।4।।

जहाँ श्रीराम और श्रीकृष्ण तथा पवित्र विश्वात्माएँ,
जहाँ भगवान बुद्ध, महान् गुरू वसिष्ठ और महर्षि वाल्मीकि हुए हैं,
(जहाँ) गौतम, जैमिनी, श्रीकणाद जैसे महान् मुनि (हुए) हैं।
(ऐसे महान्) हे भारत देश! तुम्हें नमन है। भारत तुम्हें मेरा नमन है।

यत्र रामायणं च महाभारतं
दर्शनानां चयो यत्र ज्ञानामृतम्।
यत्र स्मृत्यादिकं धर्मशास्त्रोच्चयो
भारतं तं नुमो भारतं तं नुमः।।5।।

जहाँ रामायण और महाभारत (हुई)
तथा जिनके दर्शनों में ज्ञान का अमृत है,
जहाँ स्मृति आदि उच्च धर्मशास्त्र हैं।
(ऐसे महान्) हे भारत देश! तुम्हें नमन है। भारत तुम्हें मेरा नमन है।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

मध्यम (VI- VII- VIII)

ANY FIVE OUT OF SIX

यत्र वृक्षोऽपि देवेन तुल्यो मतो
यत्र वेदेषु विश्वासभाव: स्थिर:।
यत्र सम्माननं योषितां प्रत्यहं
तत्र वासान्न को गौरवं प्राप्नुयात्?।। 1।।

जिस देश में वृक्ष भी देवत्व का प्रतीक माना जाता है और लोगों में वेदों के प्रति अखण्ड एवं स्थिर विश्वास है। जहाँ पर नारियों का प्रतिदिन सम्मान किया जाता है उस देश में वास करके कौन भला गौरव प्राप्त नहीं करता?

भारतं सङ्कटात् सत्वरं रक्षितुं
तत्परो दृश्यते निर्जरौघ: स्वयम्।।
तत्र सम्प्राप्य मानुष्यसज्जन्म भो!
को जनो यो न यातीह धन्यं पदम्?।। 2।।

जिस भारत नामक दिव्य राष्ट्र की रक्षा करने के लिए देवताओं का समूह भी निरन्तर तत्पर दिखाई देता है ऐसी भूमि पर मनुष्य का दुर्लभ जन्म प्राप्त कर वह कौन है जो अपने को धन्य नहीं मानता है?।

संस्कृताम्भोनिधेर्मन्थनाद् भूरिश:
कोविदानां सपर्याव्रतादुत्कटात्।
देवतानां गणोऽप्यस्ति यत्प्राप्तये
नित्यमुत्कण्ठित: सा सुधा स्यन्दते।।3 ।।

ऋषि- मुनियों की कठोर तपस्या से संस्कृतसागर के मन्थन से जिसका आविर्भाव किया गया है और जो तत्त्व देवताओं के लिए भी अत्यन्त दुर्लभ है और जिसको पाने हेतु देवता भी नित्य उत्कण्ठित रहते हैं वह ज्ञान सुधा इस भूतल पर बह रही है।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-शीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

पुण्यङ्गां विना पुण्यगोदां विना
पुण्यविन्ध्यञ्च पुण्यं हिमाद्रिं विना।
भारतास्तित्वरक्षा कथं सम्भवेद्।
गौरवं नास्ति नूनं विना संस्कृतम्।। 4।।

पुण्यवती जाह्नवी के बिना तथा पुण्य गोदावरी के बिना, विन्ध्य के बिना एवं पुण्य पर्वतराज हिमालय के बिना भारत की अस्मिता की रक्षा कैसे हो सकती है? क्योंकि संस्कृत के बिना भारत को गौरव नहीं मिल सकता।

संस्कृतिं स्वां परित्यज्य ये मन्वते
सभ्यतां शोभनां हन्त वैदेशिकीम्।
नो समत्वं द्वयोर्जायते जातुचित्
क्वाथ रत्नोच्चयः कुत्र काचोच्चयः।। 5।।

अपनी समृद्ध संस्कृति का परित्याग करके जो लोग विदेशी संस्कृति का आश्रय ले रहे हैं यह बड़े कष्ट की बात है। दोनों के बीच कभी भी किसी प्रकार की समता सम्भव नहीं है, कहाँ रत्न से तुलना के योग्य भारतीय समृद्ध संस्कृति! और कहाँ काँच का समूह रूप विदेशी संस्कृति!

नेतृवृन्दं मिथो हाऽद्य वित्तार्जने
कामलोभातुरं स्वार्थसिद्धौ रतम्।
न स्त्रियामादरः साम्प्रतं दृश्यते
शासनस्य व्यवस्थाऽनवस्थाङ्गता।। 6।।

देश को चलाने का व्रत लेने वाले नेताओं का दल आज तो बस धन कमाने मे मग्न, काम के लोभ में डूबा हुआ तथा स्वार्थ सिद्धि में लगा हुआ है, समाज में स्त्रियों का कहीं भी आदर नहीं दिखाई देता अब तो शासन की व्यवस्था भी लहुलुहान होकर कराह रही है!!

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

वरिष्ठ (IX- X- XI-XII)

ANY SIX OUT OF SEVEN

यत्र देशेऽस्मदीये जना: सूरयो
धर्मभावेन सम्पूजिता विश्रुता:।
विश्वबन्धुत्वभावप्रसारोद्यता:
तत्र तद्वैपरीत्यं कुतो जायते?।। 1।।

जिस देश में विद्वज्जन धर्माचरण से पूजित एवं
ख्यातिवान् होते थे तथा विश्वबन्धुत्व की भावना के
प्रचार-प्रसार में सदा उद्यत रहते थे आज उस देश में
चारों ओर से असमंज्जस का भाव कैसे पैदा हो रहा है!!

कम्पमाना धरा साम्प्रतं दृश्यते
पादपोन्मूलनात् काननोच्छेदनात्।
राजनीतिर्विपन्नाऽद्य दुर्नायकै-
र्वैरभावश्च सार्वत्रिको वर्धते।। 2।।

आज वृक्षों के नित्य कर्तन से तथा जंगलों के
उच्छेदन से पृथ्वी काँपती हुई सी दिखाई दे रही है,
आज नायकों के खलनायक बन जाने से राजनीति
विपन्न बन खेदित हो रही है जिससे सर्वत्र वैरभाव बढ़ रहा है।

भ्रातरोऽप्यद्य संयुध्यमाना मिथ:
तेन राष्ट्रं ध्रुवं दुर्बलं जायते।
शक्तिहीनत्वमालोच्य वैदेशिका
देशमाक्रन्तुकामा भवन्त्युद्यता:।। 3।।

बन्धुओं! यदि हम सभी आपस में यूँ ही लड़ते
झगड़ते रहेंगे तो पारस्परिक एकता के अभाव में यह राष्ट्र निश्चित
ही एक दिन निर्बल बन जाएगा तथा हमारी इसी निर्बलता को केन्द्रित करके
वे विदेशी एक बार पुन: आक्रमण करके हमें गुलाम बना डालेंगे ।

प्रेमभावान्वितामेकतामन्तरा
मातृभूरक्षणं नैव सम्भाव्यते।
सर्वतो दुर्दशाया: प्रभावैर्भृशं
चीत्करोति क्षतं सम्भृतं भारतम्।। 4।।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

प्रेमभावना से युक्त एकता के बिना मातृभूमि की रक्षा सम्भव नहीं। चारों ओर से दुष्ट शासकों के द्वारा उत्पादित दुर्दशा के प्रभाव से धैर्य और समृद्धि से युक्त होकर भी यह भारत राष्ट्र अपने को बचाने के लिए मानो चीत्कार कर रहा है।

नित्यमातङ्कवादस्य बीजाङ्कुरः
सर्वतो वर्धते कल्मषोद्भावितः।
चौरचौर्यैस्तथा वञ्चनैर्लुण्ठनै-
र्भारतान्तर्दशा कम्पमाना स्थिरा।। 5।।

कल्मष से उद्भावित आतंकवाद के बीच का अंकुर अब तो चारों ओर से नित्य ही प्रस्फुटित होता चला जा रहा है, आज चोरों के चोरी से तथा छल करने में निपुण लोगों की वञ्चनाओं से तथा डकैतों के जी भर लुंठनों से भारत की अन्तर्दशा निरन्तर कम्पित हो रही है!!

मन्दिरं मन्दिरं तद्धि नो मन्यते
यत्र गङ्गाऽमला नैव सङ्क्षाल्यते।
सर्वदेवार्चितां लोकपापापहां
तीर्थभूतां पवित्रां नुमो जाह्नवीम्।। 6।।

वह घर, घर नहीं जहाँ गंगा का विमल जल प्रोक्षण न किया जाय समस्त देवताओं से पूजित, लोक के पापों का उपशमन करने वाली, कलिकल्मष- नाशिनी तीर्थभूता जह्नुकन्या को पुनः पुनः प्रणाम अर्पित करता हूँ।

अद्य देशे न शान्तिः क्वचिल्लक्ष्यते
तत्परा वादयुद्धे वृथा दुर्जनाः।
वेदवाक्यप्रभावैश्च रामायणैः
सर्वभूतैकता कल्पते सुस्थिरा।। 7।।

आज इस देश में कहीं भी शान्ति नहीं दिखाई देती, दुर्जन जन तो निष्कारण ही वाद विवाद में तत्पर रहते हैं। अतः वेद के सुधोपम वाक्यों से तथा रामायण की दिव्य कथा से ही सभी मनुष्य की एकता अखण्ड और स्थिर रह सकती है।